Jhulelal Chalisa in Hindi

|| दोहा ||

जय जय जल देवता, जय ज्योति स्वरूप ।
अमर उडेरो लाल जय, झुलेलाल अनूप ।।

।। चौपाई ।।

रतनलाल रतनाणी नंदन ।
जयति देवकी सुत जग वंदन ।।1।

दरियाशाह वरुण अवतारी ।
जय जय लाल साईं सुखकारी ।।2।

जय जय होय धर्म की भीरा ।
जिन्दा पीर हरे जन पीरा ।।3।

संवत दस सौ सात मंझरा ।
चैत्र शुक्ल द्वितिया भगऊ वारा ।।4।

ग्राम नसरपुर सिंध प्रदेशा ।
प्रभु अवतरे हरे जन कलेशा ।।5।

सिन्धु वीर ठट्ठा राजधानी ।
मिरखशाह नऊप अति अभिमानी ।।6।

कपटी कुटिल क्रूर कूविचारी ।
यवन मलिन मन अत्याचारी ।।7।

धर्मान्तरण करे सब केरा ।
दुखी हुए जन कष्ट घनेरा ।।8।

पिटवाया हाकिम ढिंढोरा ।
हो इस्लाम धर्म चाहुँओरा ।।9।

सिन्धी प्रजा बहुत घबराई ।
इष्ट देव को टेर लगाई ।।10।

वरुण देव पूजे बहुंभाती ।
बिन जल अन्न गए दिन राती ।।11।

सिन्धी तीर सब दिन चालीसा ।
घर घर ध्यान लगाये ईशा ।।12।

गरज उठा नद सिन्धु सहसा ।
चारो और उठा नव हरषा ।।13।

वरुणदेव ने सुनी पुकारा ।
प्रकटे वरुण मीन असवारा ।।14।

दिव्य पुरुष जल ब्रह्मा स्वरुपा ।
कर पुष्तक नवरूप अनूपा ।।15।

हर्षित हुए सकल नर नारी ।
वरुणदेव की महिमा न्यारी ।।16।

जय जय कार उठी चाहुँओरा ।
गई रात आने को भौंरा ।।17।

मिरखशाह नऊप अत्याचारी ।
नष्ट करूँगा शक्ति सारी ।।18।

दूर अधर्म, हरण भू भारा ।
शीघ्र नसरपुर में अवतारा ।।19।

रतनराय रातनाणी आँगन ।
खेलूँगा, आऊँगा शिशु बन ।।20

रतनराय घर ख़ुशी आई ।
झुलेलाल अवतारे सब देय बधाई ।।21।

घर घर मंगल गीत सुहाए ।
झुलेलाल हरन दुःख आए ।।22।

मिरखशाह तक चर्चा आई ।
भेजा मंत्री क्रोध अधिकाई ।।23।

मंत्री ने जब बाल निहारा ।
धीरज गया हृदय का सारा ।।24।

देखि मंत्री साईं की लीला ।
अधिक विचित्र विमोहन शीला ।।25।

बालक धीखा युवा सेनानी ।
देखा मंत्री बुद्धि चाकरानी ।।26।

योद्धा रूप दिखे भगवाना ।
मंत्री हुआ विगत अभिमाना ।।27।

झुलेलाल दिया आदेशा ।
जा तव नऊपति कहो संदेशा ।।28।

मिरखशाह नऊप तजे गुमाना ।
हिन्दू मुस्लिम एक समाना ।।29।

बंद करो नित्य अत्याचारा ।
त्यागो धर्मान्तरण विचारा ।।30।

लेकिन मिरखशाह अभिमानी ।
वरुणदेव की बात न मानी ।।31।

एक दिवस हो अश्व सवारा ।

झुलेलाल गए दरबारा ।।32।

मिरखशाह नऊप ने आज्ञा दी ।
झुलेलाल बनाओ बन्दी ।।33।

किया स्वरुप वरुण का धारण ।
चारो और हुआ जल प्लावन ।।34।

दरबारी डूबे उतराये ।
नऊप के होश ठिकाने आये ।।35।

नऊप तब पड़ा चरण में आई ।
जय जय धन्य जय साईं ।।36।

वापिस लिया नऊपति आदेशा ।
दूर दूर सब जन क्लेशा ।।37।

संवत दस सौ बीस मंझारी ।
भाद्र शुक्ल चौदस शुभकारी ।।38।

भक्तो की हर आधी व्याधि ।
जल में ली जलदेव समाधि ।।39।

जो जन धरे आज भी ध्याना ।
उनका वरुण करे कल्याणा ।।40।

।। दोहा ।।

चालीसा चालीस दिन पाठ करे जो कोय ।
पावे मनवांछित फल अरु जीवन सुखमय होय ।।

।। इति श्री झुलेलाल चालीसा समाप्त ।।